

सर्वसंधिषु । मकारमस्त्रमुद्दिश्य (hier vertritt अस्त्रमुद्दिश्य die Stelle der vorangehenden locc.) BHĀG. P. 6,8,8. zu, an (sprechen, die Rede richten): एतद्वाक्यं नलो राजा दमपत्तो समाहितः । उवाचासकृदतीं हि भैमीमुद्दिश्य MBh. 3,2320. सीतामुद्दिश्य धर्मज्ञ इदं वचनमब्रवीत् R. 3,2,14. VET. 40, 18. ŚĪH. D. 10,2. zu (einladen): न्यमन्त्रयत विप्रान्स आह्वमुद्दिश्य R. 3,16, 14. für, wegen, in Rücksicht auf: प्रेतापोद्दिश्य (प्रेताप ist mit घ्नति zu verbinden, das nachfolgende उद्दिश्य dient nur zur schärferen Bestimmung des Casus) गामप्येके घ्नति PĪR. GRHJ. 3,10. ÇĀṆKH. GRHJ. 1,2. नियुक्तास्तत्र पशवस्तास्ता उद्दिश्य देवताः । जलचराः स्थलचरा अस्त्री- त्तचरास्तथा ॥ R. 1,13,31. आगताहम् — त्वमुद्दिश्य MBh. 5,5979. R. 3,18,7. स्मरमुद्दिश्य — निवपे: सहकारमञ्जरी: KUMĀRAS. 4,38. MUDRĀH. 3,9. BHĀG. P. 4,2,21. 7,7,15. तपस्वन्स हि पुत्रार्थमुद्दिश्य शशिषोखराम् um Çiva für sich zu gewinnen KATHĀS. 22,117. RĀGA-TAR. 1,132. यत् प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः । दीयते BHĀG. 17,21. यद् उद्दिश्यागत- श्चास्मि कार्यम् R. 1,21,3. ÇĀK. 62,15. आग्नेयमस्त्रमुद्दिश्य तिष्ठ तिष्ठति चाब्रवीत् R. 1,56,1. व्रतं त्रिरात्रमुद्दिश्य दिवारत्रं स्थिताभवत् ŚĪV. 4,3. PAÑKĀT. 35,8. निमित्तमुद्दिश्य im Gegens. zu अकारणात् HIT. II, 130. मु- द्यामुद्दिश्य तत्राम्ना मुत्यासेत् स निर्ममे RĀGA-TAR. 3,120. मदीषेषु लेखेषु तत्रभवन्त्स्वामुद्दिश्य समाज्ञानानि यातयिष्यामः MĀLAV. 74,9. अत्रदेवो मामुद्दिश्य in Betreff meiner, von mir KATHĀS. 2,17. गवां शतसकृन् हि ब्राह्मणेभ्यो नराधिपः । एकैकशो ददौ राजा पुत्रानुद्दिश्य धर्मतः ॥ in Namen der Söhne R. 1,72,22 (GORR. 74,28). रामशोपेत्य विज्ञाप्यो मामुद्दिश्य सगौरवम् von mir, in meinem Namen R. GORR. 1,80,21. वचसि भवति संत्यागमुद्दिश्य वार्ता श्रुतिमुखरमुखानो केवलं पाण्डितानाम् so v. a. das Gewerbe der Entsagung BHĀRTĀ. 1,56. Mit zu ergänzendem obj.: सालं- कारान्गज्ञानश्चान्द्याश्चैव वरास्त्रियः । उद्दिश्योद्दिश्य सर्वेभ्यो ददौ dem Sinne nach so v. a. dem dieses, dem jenes MBh. 13,414. — Vgl. उद्देश fgg., एकोद्दिष्ट (auch JĀĒN. 1,250).

— समुद् 1) *angeben, auführen, erwähnen, mittheilen*: भद्र्येष्वपि स- मुद्दिष्टान् (मृगद्विज्ञानं) M. 5,17. एष सर्वः समुद्दिष्टः कर्मणां वः फलोदयः 12,82,51. VARĀH. BRH. S. 40(39), 1. 47,19. 83(80,c), 41. 94,19. *bezeichnen als, nennen*: वायव्यं (वज्रं) येषामपि समुद्दिष्टम् 81(80,a), 10. आद्यं तेजः समुद्दिष्टम् 47,32. — 2) *absol. समुद्दिश्य mit Hinweisung auf (acc.)* so v. a. *auf, gegen*: न रिपून्वै समुद्दिश्य विमुञ्चति नराः शरान् MBh. 1, 4573. *für, zu Ehren von, wegen, in Berücksichtigung von*: श्यामार्कं भोजनं तत्र यः प्रपच्छति मानवः । देवान्पितृन्समुद्दिश्य MBh. 3,6039. धृ- तराष्ट्रं समुद्दिश्य ददौ सः — सुवर्णां रजतम् zu Ehren, zum Andenken des Dhṛ. 15,1094. महोत्सवं पितृनाकिनं समुद्दिश्य चक्रे HARIV. 9112. ब्रह्मणो गुरुमध्ये तु विश्वेदेवेभ्यो एव च । धन्वत्तारिं समुद्दिश्य प्रागुदीच्यां बलिं त्रिपेत् MĀRK. P. 29, 17. तत्सर्वं त्वो समुद्दिश्य सकृसाकनुयागतः *deinetwegen* MBh. 4,742. साप्यष्टमो समुद्दिश्य तत्र राजसुताययौ KATHĀS. 7,71. पर्वणि (als Zeitbestimmung im loc. stehend, das folgende समुद्दिश्य besagt, dass der Zeitpunkt zugleich als Veranlassung anzusehen sei) त्वं समुद्दिश्य सुरामन्नं च कारय MBh. 4,435. अथैव च त्वया राम गन्तव्यं वचनात्पितुः । वनवासं समुद्दिश्य नव वर्षाणि पञ्च च ॥ um im Walde 14 Jahre zu leben R. GORR. 2,13,34. 56,5. तपोव्रथं समुद्दिश्य विश्वकर्माणामाह्वयत् MBh. 1, 7688. विरटोत्तरा दत्ता लुषा यत्र किरीटिनः । अभिमन्युं समुद्दिश्य wo Vi- rāṭa seine Tochter dem Abhimanjuzur Ehe gab, wodurch sie die Schwie-

Theil III.

gertochter Arjuna's wurde, 489. — Vgl. समुद्देश.

— उप 1) *hinweisen auf*: मूर्धानमुपदिशन् ÇAT. Ba. 10,6,4,11. — 2) *anzeigen, anweisen, angeben, auseinandersetzen, lehren*: पन्थानमुपदे- ष्टुम् R. GORR. 2,53,2.9. 3,19,27. RĀGA-TAR. 4,287. बुधोपदिष्टेन पथा PAÑ- KĀT. I, 427. मित्रं चैवोपदेह्यामि भवतोः R. 3,73,35. केनेदमुपदिष्टं ते मृत्युद्वारमपावृतम् 43,40. 43,3.2. उपदिष्टमिहेच्छामि तापस्यम् MBh. 5, 6019. तस्य — त्वयाप्रतिभिद्य रक्षस्यं लब्धव्यो मोक्ष इत्युपदिश्य DA- ÇAK. in BENF. CHR. 199,22. उपदेह्यामि ते श्रेयः MBh. 3,2614. R. 1,24,11. — ÇAT. Ba. 13,4,3,3. ĀÇV. ÇA. 10,7. गृह्यकर्माण्युपदेह्यामः GOBH. 1, 1, 1. यद्यदुपदिशेषुस्तत्तत्कुर्युः ĀÇV. GRHJ. 1,44. ÇĀṆKH. GRHJ. 2,13. क्वितं चो- पदिशत्सु M. 2,206. 4,80. 12,107. BHĀG. 4,34. इष्वस्त्रं मम — भवतेव चतु- र्विधम् । उपादष्टम् MBh. 5,7065. ARĀG. 8,8. R. 2,73,26. यथोपदिष्टमधिष्ठा- जगतुः 1,4,12. आयुर्वेदमुपदिश्यमानम् SUÇR. 1,1,13. 2,20. 3,2. गुरुहृप- दिशेत्पदं पादं श्लोकं वा (शिष्याय) 13,3. 122,4. 200,3. पुरुषाणां तु पाण्डि- त्यं शास्त्रेषुवैवोपदिश्यते MĀRK. 64,5. MĀLAV. 3. नाशिष्यायोपदिश्यते PAÑ- KĀT. I, 430. KATHĀS. 12,50. 17,121. 123. MĀRK. P. 21,66. BHĀG. P. 5,13, 24. RĀGA-TAR. 4,719. उपदिशति कामिनीनां यौवनमद एव ललितानि ŚĪH. D. 13,18. Schol. zu KAP. 1,59. med.: उपदेशं मन्त्राज्ञं शमस्योपदि- शस्व मे MBh. 12,6644. उपदेह्यमाण BHĀG. P. 5,19,10. *anrathen, rathen* zu: स किं मन्त्रो यः प्रथमं भूमित्यागं युद्धेद्योगं वोपदिशति HIT. 57,1. — 3) *die gehörige Stelle anweisen, ordnen*. यथानुपूर्व्यां च यथावयश्च यत्संनि- योगैश्च तदेवोपदिष्टाः (उपविष्टाः?) । अन्नानि ते वै बुभुजुः HARIV. 8438. — 4) *er- wähnen, auführen*: उपदिष्टा वर्णाः VS. PRĀT. 1,34. पृषोदरादीनि यथो- पदिष्टम् P. 6,3, 109. इमान्देश्वैवोपदिशत्यनिड्विधौ गोषु षात्तान् KĀR. 8 aus der KĀÇ. zu P. 7,2,10. Schol. zu P. 7,2,10. जम्बुद्वीपस्य च राजनुप- द्दीपानष्टौ क्वैक उपदिशति BHĀG. P. 5,19,29. 21,7. न द्वितीयश्च साधीनां क्वचिदूर्तोपदिश्यते *nirgends ist von einem zweiten Gatten bei tugendhaf- ten Weibern die Rede* M. 5,162,3,14. किं कुलेनोपदिष्टेन शीलमेवात्र कारण- म् wozu vom Geschlechte, von der Herkunft reden? MĀRK. 126,12. — 5) *Jmd (acc.) anweisen, belehren*: विद्वान्वैवोपदिष्टव्यो नाविद्वोस्तु कदा च न । वानरानुपदिश्यान्नास्थानभ्रंशं ययुः खगाः ॥ HIT. III,5. DAÇAK. in BENF. CHR. 185,1. VEDĀNTAS. (Allah.) No. 19. Mit acc. der Person und acc. der Sache: आज्ञागम धर्मः प्रिया वेषामिवोपदेष्टुम् RAGH. 16,43. — 6) *festsetzen, vorschreiben*: ब्राह्मणास्यैव कर्मतदुपदिष्टम् M. 2,190. पाणिप्रकृषासंस्का- रः सवर्णामुपदिश्यते 3,43. कृत्यानि — आगमैरुपदिष्टानि MBh. 12,4373. व्रतं यथोपदिष्टं वै यथावत्पारितं त्वया ŚĪV. 4,16. उपदिश्यते राजपदिष्णा- म् (अप्यकृतिः) SUÇR. 2,73,4. परस्योपदिशन्पथ्यमपथ्याशीव रोगकृत् RĀGA- TAR. 6,68. वैवोपदिष्टैरभ्यङ्गैः VID. 180. PAÑKĀT. 43,10. दिगुपादिष्टे ब्रह्- म्नीहिसमाप्ते P. 1,1,28, Sch. — 7) *anweisen so v. a. befehlen über, beherr- schen*: पृथुपदिष्टा (धरित्री) KUMĀRAS. 1,2. — 8) *benennen, pass. heissen*: तस्मादन्धतामिन्नं तमुपदिशति BHĀG. P. 5,26,9. निष्कामं ज्ञानपूर्वं तु नि- वृत्तमुपदिश्यते M. 12,89. व्यान इत्युपदिश्यते MBh. 12,6873. 14,318. ÇAUT. 31. — Vgl. उपदेश, उपदेशक, उपदेशना, उपदेशिन, उपदेश्य fgg.

— प्रत्युप 1) *einzelnen auseinandersetzen*: (कर्म) व्याधिं प्रति प्रत्युपदे- ह्यामः SUÇR. 1,14,17. — 2) *Etwas Jmd zurücklehren*: यद्यत्प्रयोगाविषये भाविकमुपदिश्यते. मया तस्यै । तत्तद्विशेषकरणात्प्रत्युपदिशतीव मे बाला ॥ MĀLAV. 5. — Vgl. प्रत्युपदेश.

— समुप *zeigen, hinweisen auf*: किमर्थं विदर्भाणां पन्थाः समुपदिश्यते